Year-No 3, Dec. 2013, Vol. 5

ISSN 2249-3859

संयुक्तांक

जम्बूद्वीप शोध पत्रिका

सामाजिक विज्ञान की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वरिष्ठ सम्पादक

डॉ. देवी प्रसाद उपाध्याय

एसोसिएट प्रोफेसर भूगोल विभाग,
टी.डी.पी.जी. कालेज
जौनपुर

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. शम्भू राम

एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष भूगोल विभाग,
राजा हरपाल सिंह पी.जी. कालेज,
सिंगरामऊ, जौनपुर

सम्पादक

डॉ. संजय कुमार सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर भूगोल विभाग,
राजा हरपाल सिंह पी.जी. कालेज,
सिंगरामऊ, जौनपुर

जम्बूद्वीप सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान, जौनपुर (U.P. India)

(Regd. Under Society Registration Act, 21, 1860)

Year-No 3, Dec. 2013, Vol. 5

ISSN 2249-3859

संयुक्तांक

जम्बूद्वीप शोध पत्रिका

सामाजिक विज्ञान की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वरिष्ठ सम्पादक

डॉ. देवी प्रसाद उपाध्याय

एसोसिएट प्रोफेसर भूगोल विभाग,
टी.डी.पी.जी. कालेज
जौनपुर

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. शम्भू राम

एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष भूगोल विभाग,
राजा हरपाल सिंह पी.जी. कालेज,
सिंगरामऊ, जौनपुर

सम्पादक

डॉ. संजय कुमार सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर भूगोल विभाग,
राजा हरपाल सिंह पी.जी. कालेज,
सिंगरामऊ, जौनपुर

जम्बूद्वीप सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान, जौनपुर (U.P. India)

(Regd. Under Society Registration Act, 21, 1860)

Jambu Dwip Research Journal. ISSN.2249-3859, Vol.V, Dec-2013.

भारत–चीन सम्बन्ध : विश्वास बहाली के उपाय

*डॉ० राजेश कुमार सिंह

1648 में वेस्टफेलिया की शान्ति के बाद से पहली बार युद्ध की सम्भावना और ज्यादा अकल्पनीय बन गयी है। बड़ी शक्तियाँ शान्ति की प्रतिस्पर्द्धा कर रही है और युद्ध की तैयारी से खुद को विरत किये हुए है। विशेष रूप से शीतयुद्ध के अन्त के बाद से इतने वर्षों में विश्व राजनीति की प्रकृति और गतिशीलता में बहुत बदलाव आया है। भू–राजनीति के प्रतिमानों में जितना परिवर्तन आया है, उतने ही विश्व राजनीति की शब्दावली और मुहावरे भी बदले हैं। इस काल का एहसास अधिक से अधिक किया जा रहा है कि एक वैश्विकृत दुनियां में सहयोग और परस्पर निर्भरता का कोई विकल्प नहीं है। दुनियां भर में समान हित और एजेण्डा की तरजीह दी जा रही है। लिहाजा भारत–चीन सम्बन्धों में नये दौर के विषय में कहा जा सकता है कि गिलास निश्चित रूप से आधा भरा है। इस सदी को एशिया की सदी बनाना है, तो भारत–चीन सम्बन्धों में नजदीकी आवश्यक है।

21वीं सदी में प्रवेश करने के बाद भारत और चीन के सम्बन्धों में काफी व्यापक विकास हुआ है। दोनों देशों ने शान्ति और समृद्धि की दिशा में रणनीतिक सहयोग आधारित साझेदारी सम्बन्ध स्थपित किये हैं। चीन–भारत का सबसे बड़ा बिजनेस भागीदार बन चुका है। द्विपक्षीय व्यापार वर्ष 2000 में तीन अरब अमेरिकी डालर के मुकाबले अब लगभग 70 अरब डालर तक पहुँच चुका है। पिछले साल दोनों देशों के 8 लाख 20 हजार नागरिकों ने एक दूसरे के यहाँ दौरा या पर्यटन किया। जलवायु परिवर्तन, खाद्यान्न सुरक्षा और ऊर्जा सुरक्षा जैसे वैश्विक समस्याओं पर दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है। दोनों देशों के बीच कुछ मतभेदों के बावजूद भारत–चीन सम्बन्ध दो प्रमुख शक्तियों के बीच सबसे आकर्षक रिश्तों में से एक है। 1962 के युद्ध के बाद से जिस तरह से इन दोनों ने अपने रिश्ते को संभाला है, वह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। प्रधानमंत्री ली केकियांग और अब राष्ट्रपति सी चिनफिंग की यात्रा से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि दोनों देश अपने सम्बन्ध को स्थिर रखते हुए लाभकारी दिशा में बढ़ने के इच्छुक हैं। शायद वे जानते हैं कि संघर्षरत् भात–चीन एशियाई सदी की संभावनाओं को नष्ट तो करेंगे ही, साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक और अर्थव्यवस्था के सन्तुलन को भी बिगाड़ेंगे।

भारत–चीन के बीच एक नियमित स्थिति बनी हुई है। जिसे सुरक्षा दुविधा कहा जा सकता है। यद्यपि 1962 के बाद दोनों देशों के बीच कोई बड़ा टकराव नहीं हुआ है, लेकिन सीमा पर घुसपैठ की खबरें समय–समय पर आती रहती है। जिससे सीमा पर तनाव भी बना रहता है।

1962 के युद्ध के बाद 1978 में दोनों देशों के बीच कूटनीतिक सम्बन्धों की बहाली हुई, किन्तु 1986 की सोमदोरोंग चू की घटना ने दोनों के सम्बन्ध को सबसे कमजोर स्थिति में ला दिया था। युद्ध की कगार पर खड़े ये दोनों देश रिश्तों को फिर से पटरी पर लाने के रक्षा सहयोग एवं सैन्य सम्पर्कों के तरीके जैसे रास्ते खोजने के लिए मजबूर हो गये। दिसम्बर 1988 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी की चीन यात्रा के साथ दोनों देशों के राजनीतिक सम्बन्ध सुदृढ़ हुए, जिसमें रक्षा सहयोग और सैन्य सम्पर्कों के लिए जमीन तैयार करने वाले संयुक्त कार्यदल (जे.डब्ल्यू.जी.) की स्थापना हुई। जुलाई 1992 में तत्कालीन रक्षामंत्री शरद पवार की चीन यात्रा दोनों देशों के सैन्य

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान विभाग, राजा हरपाल सिंह पी०जी० कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ०प्र०)

Jambu Dwip Research Journal. ISSN.2249-3859, Vol.V, Dec-2013.

सम्बन्धों में एक मील का पत्थर साबित हुयी। यह भारत के किसी भी रक्षामंत्री की पहली चीन यात्रा थी। इस यात्रा में दोनों देशों ने सैन्य, वैज्ञानिक, तकनीकी और शैक्षणिक आदान–प्रदान पर सहमति प्रदान की। इस यात्रा का परिणाम 07 सितम्बर, 1993 को तत्कालीन प्रधानमंत्री पी०वी० नरसिंग राव की यात्रा के समझौता पर हस्ताक्षर में निकला। इस समझौते ने इस बात की पुष्टि की कि भारत–चीन सीमा के विवाद का समाधान शान्तिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण तरीके से होगा। इस समझौते का अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु था कि दोनों देशों के बीच सीमा के सवाल का अन्तिम समाधान होने तक दोनों पक्ष वास्तविक नियंत्रण रेखा (एल.ए.सी.) का कड़ाई से पालन करेंगे।

एल.ए.सी. का अर्थ उस रेखा से माना जाता है। जहाँ तक दोनों पक्षों की सेनाएं प्रभावी नियंत्रण रखती है। इस शब्द का सबसे पहला उल्लेख तत्कालीन चीनी प्रधानमंत्री चाउ–एन–लाई ने 1959 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को लिखे एक पत्र में किया था। बीजिंग का दावा था कि भारत और चीन के बीच एक सुपरिभाषित सीमा नहीं है, लेकिन एक सुपरिचित एल.ए.सी. है। इसलिए वास्तविक नियंत्रण रेखा का प्रारम्भिक रेखांकन सीमा क्षेत्रों की अस्पृश्यता और एक ऐसी कामकाजी सीमा की स्थापना के विकल्प के रूप में उभरा, जिसका सम्मान दोनों पक्ष के सैन्यबल करते हैं।

दूससरे समझौते में कहा गया है कि दोनों पक्ष एल.ए.सी. के साथ लगे क्षेत्रों में अपने सैन्यबलों को एक न्यूनतम स्तर पर रखेंगे।

तीसरा समझौता सैन्य अभ्यास के सम्बन्ध में है, जिसमें कहा गया है कि प्रत्येक पक्ष वास्तविक नियंत्रण रेखा के निकट समझौते के तहत अनुमति प्राप्त निर्दिष्ट स्तर के सैन्य अभ्यास की दूसरे पक्ष को पूर्व सूचना देगा। चौथा, एल.ए.सी. पर होने वाली आकस्मिक समस्याओं का निपटारा दोनों देशों के सीमाकर्मी दोस्ताना परामर्श के माध्यम से करेंगे। तीन साल बाद 29 नवम्बर, 1996 को चीनी राष्ट्रपति जियांग जेमिन की भारत–यात्रा के दौरान एल.ए.सी. पर विश्वास निर्माण के उपाय पर समझौता किया गया। इस समझौते में 1993 की भावना को एक बार फिर से दुहराया गया, साथ ही इसमें प्रमुख श्रेणियों के हथियार लड़ाकू टैंक, पैदल सेना, बड़ी तोपें तथा मिसाइलों को सीमित करने की बात कही गयी। एल.ए.सी. करीब बड़े पैमाने पर सैन्य अभ्यास की भी मनाही की गयी और ऐसा करना अनिवार्य होने पर अभ्यास से सम्बन्धित समस्त सूचनायें दूसरे पक्ष को देना तय किया गया है। वायु घुसपैठ रोकने का भी इस समझौते में प्रावधान है। एल.ए.सी. से 10 किलोमीटर के भीतर युद्धक विमान नहीं उड़ सकेंगे। समझौते में यह प्राविधान है कि प्राकृतिक आपदा जैसी अपरिहार्य परिस्थिति में सैनिक एल.ए.सी. के उस ओर जा सकेंगे और दूसरी तरफ उन्हें सभी सम्भव सहायता दी जायेगी और यथाशीघ्र उन्हें वापस भेज दिया जायेगा। इसमें यह भी कहा गया है कि जब तक वास्तविक नियंत्रण रेखा की पुष्टि नहीं होती, दोनों पक्ष इस समझौते के तहत परिकल्पित विश्वास निर्माण के उपाय अन्तरिम तौर पर लागू करने के तौर–तरीकों पर काम करेंगे।

अप्रैल 2003 में तत्कालीन रक्षामंत्री जार्ज फर्नाडीस और उसके बाद जून, 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की चीन यात्रा सबसे महत्वपूर्ण थी। ये यात्राएं एक दशक से अधिक के अन्तराल पर हुयी थी तथा पोखरण परीक्षण के बाद उत्पन्न तनाव को कम करने में मददगार भी साबित हुई थी। 2003 में हस्ताक्षरित घोषणापत्र में अन्य बातों के अलावा कहा गया कि .....वे दोनों देश रक्षा आदान–प्रदान बढ़ाने और उसे व्यापक बनाने की आवश्यकता पर सहमत हैं तथा सशस्त्र बलों के बीच विश्वास और समझ को बढ़ाने और गहरा करने के लिए भी प्रतिबद्ध है।

उन्होंने पुष्टि की कि उनके रक्षामंत्रियों और विभिन्न स्तरों पर सैन्य अधिकारियों की यात्राओं के आदान–प्रदान को सशक्त किया जायेगा।

अप्रैल 2005 में चीनी प्रधानमंत्री वेन जियबाओं की यात्रा के दौरान दोनों देशों के सम्बन्धों में एक बड़ा उछाल दिखा, जब 11 अप्रैल 2005 को दोनों देशों के बीच 1996 में विश्वास निर्माण उपाय समझौते के कुछ प्रावधानों को और स्पष्ट किया गया तथा समझौते की कुछ द्विपक्षीय प्रतिबद्धताओं को शब्दशः दोहराया गया।

जून 2006 में दोनों देशों के बीच समझौता ज्ञापन हुआ। तत्कालीन रक्षामन्त्री प्रणव मुखर्जी की मई/जून 2006 की पांच दिवसीय यात्रा में प्रधानमंत्री वेन जियाबाओं तथा जनरल काओं गैगचौम से व्यापक वार्ता हुई। यात्रा का मुख्य बिन्दु समझौता ज्ञापन था। इसमें नियमित संयुक्त सैन्य अभ्यास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए एक वार्षिक कैलेण्डर तैयार करने के अलावा दोनों देशों के रक्षा मंत्रालयों के अधिकारियों और नेताओं की बारम्बार और नियमित आवाजाही को सुनिश्चत करने के लिए एक तन्त्र की स्थापना की सम्भावना पर विचार किया गया।

नवम्बर 2006 में चीनी राष्ट्रपति हू जिंताओं के भारत दौरे के दौरान ये सम्बन्ध और सुदृढ़ हुए। 2007 में युन्नान के कुनमिंग में पहली भारत–चीन संयुक्त सैन्य अभ्यास की सफलता से उत्साहित होकर एक सप्ताह का भारत–चीन संयुक्त आतंकवाद विरोधी प्रशिक्षण कार्यक्रम कर्नाटक के बेलगाम में 6 दिसम्बर, 2008 को हुआ। यह संयुक्त प्रशिक्षण दोनों सेनाओं की आपसी समझ और विश्वास को बढ़ावा देने वाला साबित हुआ।

2009 तक भारत और चीन के मध्य रक्षा सहयोग की एक स्वस्थ गति बनी रही। लेकिन स्टेपल्ड बीजा के मुद्दे ने भारत को जुलाई 2010 में उत्तरी कमान के प्रमुख जनरल बी.एल. जसवाल की चीन की यात्रा निरस्त करने के लिए मजबूर कर दिया। इसका हल अप्रैल 2011 में प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह व चीनी राष्ट्रपति हू–जिताओं के ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हुयी मुलाकात के समय निकला। इसके बाद डेल्टा कोर्स के जनरल आफिसर कमांडिंग मेजर जनरल गुरूमीत सिंह के नेतृत्व में जून 2011 में एक 08 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल चीन गया। प्रतिनिधि मण्डल ने बीजिंग बाहुल स्वायत क्षेत्र में झींग–जियांग की राजधानी उरूमची व शंघाई का दौरा किया। चीनी विदेश मंत्रालय ने व्यक्तव्य देते हुए कहा था कि सैन्य आदान–प्रदान हमारे सम्बन्धों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, किसी भी क्षेत्र में किसी भी अड़चन से हमारे द्विपक्षीय सम्बन्धों पर पानी नहीं फिरना चाहिए। भारत–चीन सम्बन्ध के महत्व पर टिप्पणी करते हुए राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय के प्रो० कुया–बेई ने कहा कि चीन और भारत दुनिया के सबसे बड़े विकासशील देश है, इन दोनों के बीच दोस्ती व शान्ति केवल दोनों देशों के हित में नहीं है, बल्कि दक्षिण एशिया में शान्ति स्थिरता और समृद्धि लाने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

चीन के राष्ट्रपति सी चिनफिंग का तीन दिवसीय भारत दौरा सम्पन्न हो गया, हालांकि ठोस नतीजों की बात करें तो इसमें कोई महत्वपूर्ण विचार उभरता हुआ दिखायी नहीं देता। वर्षो से चीन ने अपनी विशाल परियोजनाओं, तीव्र महत्वाकांक्षाओं को उन्हें पूरा करने की तेज रफ्तार जैसी चीजों के लिए प्रसिद्धि पायी है। चीनी राष्ट्रपति की यात्रा के दौरान दोनों देश दोस्ती की इबारत लिखने को बेकरार दिख रहे हैं। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि वैश्विक मंचों पर कई मुद्दों पर भारत और चीन का रुख एक जैसा है, चाहे वह विश्व व्यापार संगठन से जुड़ा मसला हो, अन्तर्राष्ट्रीय वित्त प्रणाली में सुधार कर बात हो, सीरिया में हिंसा की बात हो या जलवायु परिवर्तन की बात हो, दोनों ही क्षेत्रीय स्थिरता और आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने की वकालत करते हैं।

आतंकवाद से जंग और अफगानिस्तार जैसे मसलों पर दोनों के एक से हित है। इसके अलावा भी कई ऐसे मसले हैं, जिन पर भारत और चीन की रीति–नीति एक–सी है। ये भी इन्हें एक नैसर्गिक दोस्त की श्रेणी में खड़ा करने की वजह बनते हैं, जैसे –

जलवायु परिवर्तन

दोनों देशों की राय रही है कि यूएन क्लाइमेट समिट ऐसा फोरम नहीं है, जिससे पूरे विश्व की जलवायु के विषय पर कोई निर्णय सुनाया जा सके। विकसित व विकासशील देशों में अन्तर करना ही होगा।

आतंकवाद –

चीन के जिनजियांग में ईस्ट तुर्किस्तान इस्लामिक मूवमेंट के आतंकी सक्रिय है। ईटीआईएम को अलकायदा का संरक्षण प्राप्त है। हालांकि पाकिस्तान को लेकर उसके रुख से सवाल जरूर खड़े होते रहे।

अफगानिस्तान –

शान्ति स्थिरत और समृद्ध अफगानिस्तान दोनों के हित में है।

सीरिया –

भारत–चीन का पक्ष रहा है कि किसी देश की सम्प्रभुता–एकता पर आँच नहीं आनी चाहिए।

ब्रिक्स –

ब्रिक्स डेवलपमेंट आईएमएफ में अमेरिका के वर्चस्व को देखते हुए खड़ा किया गया।

वित्तीय प्रणाली में सुधार –

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी संस्थाओं के नियम–कानूनों में बदलाव लाते हुए कोटा सिस्टम चाहते हैं।

इके अलावा दोनों देशों के बीच कुछ मसले ऐसे भी हैं, जो इन दोनों के बीच दूरी पैदा करते हैं। जैसे –

सीमा विवाद –

दोनों देशों के बीच 3488 किमी० लम्बी सीमा–रेखा है। ब्रिटिश भारत और तिब्बत ने 1914 में शिमला समझौते के तहत अन्तर्राष्ट्रीय सीमा के रूप में मैकमहोन रेखा निर्धारित की। चीन इस रेखा को अवैध मानता है, लेकिन वास्तविक नियंत्रण रेखा की स्थिति भी कमोवेश यही है।

नत्थी वीजा –

अरुणांचल प्रदेश व लद्दाख के कुछ विवादित क्षेत्रों के लिए चीन नत्थी बीजा जारी करता है।

ब्रह्मपुत्र पर बांध –

चीन के ब्रह्मपुत्र पर डेम बना लेने से इस नदी में 200 विलियन क्यूबिक मीटर पानी का बहाव कम जो जाएगा।

विदेश में कारोबार –

भारत की द० अफ्रीका व लैटिन अमेरिका में कारोबारी गतिविधियों से चीन सशंकित रहा है।

तिब्बती शरणार्थी –

तिब्बत के धार्मिक नेता दलाईलामा के भारत में शरण लिए जाने पर चीन आंखें तरेरता है। चीन ने 1950 में तिब्बत को अपने में मिला लिया था।

द्विपक्षीय कारोबार –

1978 में व्यापारिक सम्बन्ध शुरू हुए। छह साल बाद दोनों ने मोस्ट फेवर्ड नेशन का समझौता हस्ताक्षरित किया। वर्ष 2000 में व्यापार मात्र 2.92 अरब डॉलर था। 2011 में यह 73.9 अरब डॉलर हुआ।

दक्षिण चीन सागर –

चीन को दक्षिण चीन सागर के हिस्से में वियतनाम के साथ मिलकर भारत के प्राकृतिक गैस की खोज का काम करने पर एतराज हे। ओएनजीसी की विदेशी शाखा ओएनजीसी विदेश लिमिटेड व वियतनाम की कम्पनी पेट्रो वियतनाम मिलकर काम कर रहे हैं। 22 जुलाई 2011 को जब भारतीय नौ–सेना का आईएनएस एरवत यहां से होते हुए वियतनाम की मैत्री यात्रा पर गया था, तब भी चीन ने आपत्ति जतायी थी।

भारत–चीन के बीच में सहयोग की सम्भावनाएं भी हैं, तो साथ ही मतभेद के पर्याप्त कारण भी है। इन्हीं हालातों के बीच चीनी राष्ट्रपति की भारत–यात्रा के दौरान चीनी सैनिकों की चुमार (लद्दाख) में भारी घुसपैठ ने अपेक्षाओं के स्तर को गिराया है। हालांकि यह कहना बहुत सही नहीं होगा कि विवादित ससीमा और तिब्बती मसला मजबूत आर्थिक आधर बनाने के प्रयासों में अवरोध उत्पन्न करते हैं। उम्मीद यह थी कि चीन का भारत में 100 अरब डॉलर का निवेश होगा, किन्तु मिला सिर्फ 20 अरब। इसे किस तरह देखा जाये? चीनी नेताओं के अब तक के सभी दौरे सीमा विवाद के साये में होते रहे हैं, सामान्य भारतीय के मन में यह सवाल उठता है कि जब चीन भूटान को छोड़ सभी देशों के साथ सीमा विवाद को हल कर चुका है, तो भारत के साथ क्यों नहीं? समय की मांग है कि दोनों देश सीमा विवाद की समस्या का समाधान करें और अच्छी बात है कि दोनों ने ही समाधान को जरूरी बताते हुए इसे सर्वाधिक अहम् रणनीतिक उद्देश्य बताया है। चीन फोर्थ जनरेशन के आर्थिक सुधार के मुहाने पर है, तिब्बत व जिन–जियंग में अशान्ति व हिंसा बढ़ी है। साफ है कि चीनी नेताओं के समक्ष घरेलू समस्या भी कम नहीं है, लेकिन यह दीन का नेता नहीं हो सकता, जो इन सबके बावजूद एशिया के लिए बड़े दृश्य और दृष्टिकोण विकसित न कर सकें। यह वास्तव में रोचक व नई सोच है कि ऐतिहासिक सिल्क रोड पर बात हो रही है, इसके लिए व्यापक फ्रेम वर्क तैयार करना होगा। भारत को अपने काम जिम्मेदारीपूर्वक पूरा करना होगा। अतीत के मोहपाश से उपजे विषवाद को विकास की राह का रोड़ा नहीं बनने देना होगा। यह भी सोचना होगा कि भारत–चीन सम्बन्ध एक बार फिर पूर्ववत् मधुर हो जाते हैं तो वे कितनी देर ऐसी ही बने रहेंगे। चीनी 'स्वभाव', 'परम्परा', 'जातीय स्मृति', ऐतिहासिक अनभव आदि के बारे में सरलीकृत निष्कर्ष का जोखिम उठाये बिना यह अटकल लगाई जा सकती है कि समर्थ शक्ति के रूप में चीन का उभरना पड़ोसियों के लिए एक पेंचीदा चुनौती है। भविष्य की ओर देखने के साथ–साथ हमें भूत में मिले अनुभवों को भूलना नहीं होगा। हमें अपनी भावनाओं और जज्बातों को अपने ऊपर हावी होने देने की भूल पुनः नहीं दोहरानी है। हमें इस तथ्य को कभी नहीं भूलना है कि जब तक हिमालय की ठण्डक में हजारों सैनिक आमने–सामने जमें रहेंगे, तब तक गोली चल जाने की छोटी–सी दुर्घटना के भी जंग में बदल जाने की सम्भावना बरकरार रहेगी। इन्फा के सम्पादक इन्द्रजीत के इस विचार को स्वीकार करना होगा कि, "भारत–चीन सम्बन्धों में राजीव द्वारा आरम्भ किए गए नए अध्याय से हमारे सीमा–विवाद के समाधान के लिए पुराने मैत्री के लिए नई आशाएं बँधी हैं, किन्तु हमें सावधानीपूर्वक कदम बढ़ाना होगा।"

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. रॉबर्ट ओ केओहन, (सं) निओरिअलिज्म एण्ड इट्स क्रिटिक्स, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क 1986.
2. जोनाथन होलरलैग, "द परस्टेट मिलिट्री डिलेमा बिट्वीन चाइना एण्ड इण्डिया", द जर्नल ऑफ स्ट्रैटेजिक स्टडीज, 32 (6) दिसम्बर 2009, पृ०–811–840.
3. ब्रह्मा चेलानी, एशियन जगरनॉट, हार्पर कोलिंस, 2010 पृ० 296–300.
4. अन्ना आर्टन, इण्डियाज़ बार्डर लैट डिस्प्यूट, चाइना, पाक, बांग्लादेश एण्ड नेपाल, इपीटॉम बुक्स, नई दिल्ली, 2010, पृ० 4–5.
5. ब्रह्मा चेलानी, 33 नम्बर, पृ० 301–308.
6. ब्रह्मा चेलानी, 33 नम्बर, पृ० 317.
7. ब्रह्मा चेलानी, 33 नम्बर, पृ० 322–327.
8. लोकसभा बहस, "विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी का स्वैच्छिक बयान", चीनी राष्ट्रपति की यात्रा, 28 नवम्बर 2006.
9. वार्म मीटिंग ऐट न्यू बार्डर प्वाइंट "द हिन्दू 21 नवम्बर 2006 फ्रेम चाइना"।
10. इण्डिया चाइना मिलिट्री एक्सरसाइसेज लैंडमार्ग डेवलपमेंट रिपार्ट 22 दिसम्बर, 2007.
11. सम्पादकीय दैनिक जागरण, 18 सितम्बर 2014.
12. सम्पादकीय दैनिक जागरण, 20 सितम्बर 2014.
13. इन्द्रजीत, मित्रता की ओर नया कदम, दिनमान, 15 जनवरी, 1989, पृ०–45.